الجزء ٥

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ

तुम्हारे दाहने हाथ	मालिक हो जाएं	जो - जिस	मगर	औरतें	से	और ख़ावन्द वाली औरतें

كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا

तुम चाहो	कि	उन के	सिवा	तुम्हारे लिए	और हलाल की गईं	तुम पर	अल्लाह का हुक्म

بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۭ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ

तो उन को दो	उन में से	उस से	तुम नफ़ा (लज़्ज़त) हासिल करो	पस जो	हवसरानी को	न	क़ैदे (निकाह) में लाने को	अपने मालों से

اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	उस से	तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ	उस में जो	तुम पर	गुनाह	और नहीं	उन के मेहर मुक़र्रर किए हुए

الْفَرِيْضَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ

ताक़त रखे	न	और जो	24	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह	मुक़र्रर किया हुआ

مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ

तुम्हारे हाथ मालिक हो जाएं	जो	तो-से	मोमिन (जमा)	बीवियां	कि निकाह करे	तुम में से मक़्दूर

مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۭ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ

बाज़ (एक दूसरे से)	से	तुम्हारे बाज़	तुम्हारे ईमान को	ख़ूब जानता है	और अल्लाह	मोमिन मुसलमान	तुम्हारी कनीज़ें	से

فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ

क़ैदे (निकाह) में आने वालियां	दस्तूर के मुताबिक़	उन के मेहर	और उन को दो	उन के मालिक	इजाज़त से	सो उन से निकाह करो

غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ

वह करें	फिर अगर	निकाह में आजाएं	पस जब	चोरी छुपे	आशनाई करने वालियां	और न	मस्ती निकालने वालियां	न कि

بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ۭ ذٰلِكَ

यह	(सज़ा) अज़ाब	से	आज़ाद औरतें	पर	जो	निस्फ़	तो उन पर	बेहयाई

لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۭ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे लिए	बेहतर	तुम सब्र करो	और अगर	तुम में से	तक्लीफ़ (ज़िना)	डरा	उस के लिए जो

ع ١ رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾ ۧ يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	वह जो कि	तरीक़े	और तुम्हें हिदायत दे	तुम्हारे लिए	ताकि बयान कर दे	चाहता है अल्लाह	25	रहम करने वाला

وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ

तवज्जुह करे	कि	चाहता है	और अल्लाह	26	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तुम पर	और तवज्जुह करे

عَلَيْكُمْ ۣ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾

27	बहुत ज़ियादा	फिर जाना	फिर जाओ	कि	ख़्वाहिशात	जो लोग पैरवी करते हैं	और चाहते हैं	तुम पर

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾

28	कमज़ोर	इन्सान	और पैदा किया गया	तुम से	हलका कर दे	कि	चाहता है अल्लाह

और ख़ावन्द वाली औरतें (हराम हैं) मगर (काफ़िरों की औरतें) जिन के मालिक तुम्हारे दाहने हाथ हो जाएं (तुम मालिक हो जाओ), यह तुम पर अल्लाह का हुक्म है, और उन के सिवा सब औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं बशर्त यह कि तुम चाहो अपने मालों से क़ैदे (निकाह) में लाने को, न कि हवसरानी को, पस तुम में से जो उन से नफ़ा (लज़्ज़त) हासिल करें तो उन को उन के मुक़र्रर किए हुए मेहर देदें और तुम पर उस में कुछ गुनाह नहीं जिस पर तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ उस के मुक़र्रर कर लेने के बाद, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (24)

और जिस को तुम में से मक़्दूर न हो कि वह (आज़ाद) मुसलमान बीवियों से निकाह करे तो जो मुसलमान कनीज़ें तुम्हारे हाथ की मिल्क हों (क़ब्ज़े में हों), और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है, तुम एक दूसरे के (हम जिन्स हो), सो उन के मालिक की इजाज़त से उन से निकाह कर लो, और उन को दे दो उन के मेहर दस्तूर के मुताबिक़, क़ैदे निकाह में आने वालियां न कि मस्ती निकालने वालियां न आशनाई करने वालियां चोरी छुपे, पस जब निकाह में आजाएं फिर अगर वह बेहयाई का काम करें तो उन पर निस्फ़ सज़ा है जो आज़ाद औरतों पर है, यह उस के लिए जो तुम में से डरे (बदकारी की) तक्लीफ़ में पड़ने से, और अगर तुम सब्र करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (25)

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए बयान कर दे और तुम्हें हिदायत दे तुम से पहले लोगों के तरीक़ों की, और तुम पर तवज्जुह करे (तौबा क़ुबूल करे) और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (26)

और अल्लाह चाहता है कि वह तवज्जुह करे तुम पर, और जो लोग ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं वह चाहते हैं कि तुम (राहे हिदायत से) फिर जाओ बहुत ज़ियादा। (27)

अल्लाह चाहता है कि तुम से (बोझ) हलका कर दे, और इन्सान पैदा किया गया है कमज़ोर। (28)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ

नाहक़	आपस में	अपने माल	न खाओ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۟ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ

अपने नफ़्स (एक दूसरे)	और न क़त्ल करो	तुम से	आपस की ख़ुशी से	कोई तिजारत	यह कि हो	मगर

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٢٩﴾ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا

और ज़ुल्म से	सरकशी (ज़ोर)	यह	करेगा	और जो	29	बहुत मेहरबान	तुम पर	है	बेशक अल्लाह

فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾ اِنْ

अगर	30	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	आग	उस को डालेंगे	पस अनक़रीब

تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ

और हम तुम्हें दाख़िल कर देंगे	तुम्हारे छोटे गुनाह	तुम से	हम दूर कर देंगे	उस से	जो मना किए गए	बड़े गुनाह	तुम बचते रहो

مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ

बाज़	पर	तुम में से बाज़	उस से	जो बड़ाई दी अल्लाह	आर्ज़ू करो	और न	31	इज़्ज़त	मुक़ाम

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ

उन्हों ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	और औरतों के लिए	उन्हों ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	मर्दों के लिए

وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾ وَلِكُلٍّ

और हर एक के लिए	32	जानने वाला	चीज़	हर	है	बेशक अल्लाह	उस के फ़ज़्ल से	और अल्लाह से सवाल करो (मांगो)

جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ

बन्ध चुका	और वह जो कि	और क़राबतदार	वालिदैन	छोड़ मरें	उस से जो	वारिस	हम ने मुक़र्रर किए

اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾ ع ٨ ٢

33	गवाह (मुत्तला)	हर चीज़	ऊपर	है	बेशक अल्लाह	उन का हिस्सा	तो उन को दे दो	तुम्हारा अहद

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى

उन में से बाज़ पर	अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	इस लिए कि	औरतें	पर	हाकिम (निगरान)	मर्द

بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ

निगहबानी करने वालियां	ताबे फ़रमान	पस नेकोकार औरतें	अपने माल	से	उन्हों ने ख़र्च किए	और इस लिए कि	बाज़

لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ

पस उन को समझाओ	उन की बद ख़ूई	तुम डरते हो	और वह जो	अल्लाह	हिफ़ाज़त की	उस से जो	पीठ पिछे

وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ

वह तुम्हारा कहा मानें	फिर अगर	और उन को मारो	ख़ाबगाहों में	और उन को तनहा छोड़ दो

فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

34	सब से बड़ा	सब से आला	है	बेशक अल्लाह	कोई राह	उन पर	तो न तलाश करो

ऐ मोमिनों अपने माल आपस में न खाओ नाहक़ (तौर पर) मगर यह कि तुम्हारी आपस की ख़ुशी से कोई तिजारत हो, और क़त्ल न करो एक दूसरे को, बेशक अल्लाह तुम पर बहुत मेहरबान है। **(29)**

और जो शख़्स यह करेगा सरकशी (ज़ोर) और ज़ुल्म से, पस अनक़रीब हम उस को आग में डाल देंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। **(30)**

अगर तुम बड़े गुनाहों से बचते रहे जो तुम्हें मना किए गए हैं तो हम तुम से दूर कर देंगे तुम्हारे छोटे गुनाह और हम तुम्हें इज़्ज़त के मुक़ाम में दाख़िल कर देंगे। **(31)**

और आर्ज़ू न करो (उस की) जो बड़ाई दी अल्लाह ने तुम में से बाज़ को बाज़ पर, मर्दों के लिए हिस्सा है उस से जो उन्हों ने कमाया, और औरतों के लिए हिस्सा है उस से जो उन्हों ने कमाया, और अल्लाह से उस का फ़ज़्ल मांगो, बेशक अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। **(32)**

और हम ने हर एक के लिए वारिस मुक़र्रर कर दिए हैं उस (माल) के लिए जो छोड़ मरें वालिदैन और क़राबतदार, और जिन लोगों से तुम्हारा अहद ओ पैमान बन्ध चुका तो उन को उन का हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाह (मुत्तला) है। **(33)**

मर्द औरतों पर हाकिम (निगरान) हैं इस लिए कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस लिए कि उन्हों ने अपने माल ख़र्च किए, पस जो नेकोकार हैं (मर्द की) ताबे फ़रमान हैं, पीठ पीछे (अदम मौजूदगी में) हिफ़ाज़त करने वाली हैं अल्लाह की हिफ़ाज़त से। और तुम्हें डर हो जिन औरतों की बद ख़ूई का पस उन को समझाओ और ख़ाबगाहों में उन को तनहा छोड़ दो और उन को मारो, फिर अगर वह तुम्हारा कहा मानें तो उन पर (इल्ज़ाम की) कोई राह तलाश न करो। बेशक अल्लाह सब से आला (बुलन्द) सब से बड़ा है। **(34)**

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ

मर्द का ख़ानदान	से	एक मुन्सिफ़	तो मुक़र्रर करदो	उन के दरमियान	ज़िद (कशमकश)	तुम डरो	और अगर

وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ

उन दोनों में	अल्लाह	मुवाफ़क़त कर देगा	सुलह कराना	दोनों चाहेंगे	अगर	औरत का ख़ानदान	से	और एक मुन्सिफ़

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ٣٥ وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ

और न शरीक करो उस के साथ	और तुम अल्लाह की इबादत करो	35	बहुत बाख़बर	बड़ा जानने वाला	है	बेशक अल्लाह

شَيْــًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى

और यतीम (जमा)	और क़राबतदारों से	अच्छा सुलूक	और माँ बाप से	कुछ-किसी को

وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ

अज्नबी	और हमसाया	क़राबत वाले	और हमसाया	और मोहताज (जमा)

وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	तुम्हारी मिल्क (कनीज़-गुलाम)	और जो	और मुसाफ़िर	और पास बैठने वाले (हम मज्लिस) से

لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ٣٦ ۙ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ

और हुक्म करते (सिखाते) हैं	बुख़्ल करते हैं	जो लोग	36	बड़ मारने वाला	इतराने वाला	हो	जो	दोस्त नहीं रखता

النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ

अपना फ़ज़्ल	से	अल्लाह ने उन्हें दिया	जो	और छुपाते हैं	बुख़्ल	लोग

وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ٣٧ ۚ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

ख़र्च करते हैं	और जो लोग	37	ज़िल्लत वाला	अ़ज़ाब	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार कर रखा है

اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ

आख़िरत के दिन पर	और न	अल्लाह पर	ईमान लाते	और नहीं	लोग	दिखावे को	अपने माल

وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ٣٨ وَمَاذَا

और क्या	38	साथी	तो बुरा	साथी	उस का	शैतान	हो	और जो-जिस

عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ

अल्लाह	उन्हें दिया	उस से जो	और वह ख़र्च करते	और यौमे आख़िरत पर	अल्लाह पर	अगर वह ईमान लाते	उन पर

وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ٣٩ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ

हो	और अगर	ज़र्रा	बराबर	ज़ुल्म नहीं करता	बेशक अल्लाह	39	ख़ूब जानने वाला	उन को	अल्लाह	और है

حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ٤٠ فَكَيْفَ

फिर कैसा-क्या	40	बड़ा	सवाब	अपने पास से	और देता है	उस को कई गुना करता है	कोई नेकी

اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ٤١ ؕ

41	गवाह	इन के	पर	आप को	और बुलाएंगे	एक गवाह	हर उम्मत	से	हम बुलाएंगे	जब

وقف النبي ﷺ

और अगर तुम डरो उन दोनों के दरमियान ज़िद (कशमकश) से तो मुक़र्रर कर दो एक मुन्सिफ़ मर्द के ख़ानदान से और एक मुन्सिफ़ औरत के ख़ानदान से, अगर वह दोनों सुलह कराना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों के दरमियान मुवाफ़क़त कर देगा, बेशक अल्लाह बड़ा जानने वाला बहुत बाख़बर है। (35)

और अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ शरीक न करो किसी को और अच्छा सुलूक करो माँ बाप से और क़राबतदारों से और यतीमों और मोहताजों से और क़राबत वाले हमसाया से और अज्नबी हमसाया से और पास बैठने वाले (हम मज्लिस) से और मुसाफ़िर से और जो तुम्हारी मिल्क हों (कनीज़ गुलाम), बेशक अल्लाह उसे दोस्त नहीं रखता जो इतराने वाला, बड़ मारने वाला हो, (36)

और जो बुख़्ल करते हैं और लोगों को बुख़्ल सिखाते हैं और वह छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया, और हम ने काफ़िरों के लिए तैयार कर रखा है ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब। (37)

और जो लोग अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं और ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और न आख़िरत के दिन पर, और जिस का शैतान साथी हो तो वह बुरा साथी है। (38)

और उन का क्या (नुक़्सान) होता अगर वह ईमान ले आते अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर और उस से ख़र्च करते जो अल्लाह ने उन्हें दिया, और अल्लाह उन को ख़ूब जानने वाला है। (39)

बेशक अल्लाह ज़र्रा बराबर ज़ुल्म नहीं करता, और अगर कोई नेकी हो तो उसे कई गुना कर देता है और देता है अपने पास से बड़ा सवाब। (40)

फिर क्या (कैफ़ियत होगी) जब हम हर उम्मत से एक गवाह बुलाएंगे और आप (स) को इन पर गवाह बना कर बुलाएंगे। (41)

يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى

काश बराबर कर दी जाए	रसूल	और नाफ़रमानी की	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया	आर्ज़ू करेंगे	उस दिन

بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ع ﴿٤٢﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ ع ٦ ٩ ٣

वह लोग जो	ऐ	42	कोई बात	अल्लाह	छुपाएंगे	और न	ज़मीन	उन पर

اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا

समझने लगो	यहां तक कि	नशे	जब कि तुम	नमाज़	न नज़दीक जाओ	ईमान लाए

مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِىْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ

तुम गुस्ल कर लो	यहां तक कि	हालते सफ़र	सिवाए	गुस्ल की हाजत में	और न	तुम कहते हो	जो

وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ

से	तुम में	कोई	या आए	सफ़र	पर-में	या	मरीज़	तुम हो	और अगर

الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا

तो तयम्मुम करो	पानी	फ़िर तुम ने न पाया	औरतें	तुम पास गए	या	जाए ज़रूर

صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

है	बेशक अल्लाह	और अपने हाथ	अपने मुँह	मसह कर लो	पाक	मिट्टी

عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٤٣﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ

किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	43	बख़्शने वाला	माफ़ करने वाला

يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿٤٤﴾ ط وَاللّٰهُ

और अल्लाह	44	रास्ता	भटक जाओ	कि	और वह चाहते हैं	गुमराही	मोल लेते हैं

اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

45	मददगार	अल्लाह	और काफ़ी	हिमायती	अल्लाह	और काफ़ी	तुम्हारे दुश्मनों को	ख़ूब जानता है

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ

उस की जगह	से	कलिमात	तहरीफ़ करते हैं (बदल देते हैं)	यहूदी हो गए	वह लोग जो	से (बाज़)

وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا

और राइना	सुनवाया जाए	न	और सुनो	और हम ने नाफ़रमानी की	हम ने सुना	और कहते हैं

لَيًّا ۢ بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِى الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا

हम ने सुना	कहते	वह	और अगर	दीन में	ताने की नीयत से	अपनी ज़बानों को	मोड़ कर

وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ

और ज़ियादा दुरुस्त	उन के लिए	बेहतर	तो होता	और हम पर नज़र कीजिए	और सुनिए	और हम ने इताअ़त की

وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٤٦﴾

46	थोड़े	मगर	पस ईमान नहीं लाते	उन के कुफ़्र के सबब	अल्लाह	उन पर लानत की	और लेकिन

उस दिन आर्ज़ू करेंगे वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और रसूल की नाफ़रमानी की, काश! (उन्हें मिट्टी में दबा कर) ज़मीन बराबर कर दी जाए, और वह अल्लाह से न छुपा सकेंगे कोई बात। **(42)**

ऐ ईमान वालो! तुम नमाज़ के नज़दीक न जाओ जब तुम नशे (की हालत में) हो, यहां तक कि समझने लगो जो (ज़बान से) कहते हो, और न (उस वक़्त जब कि) गुस्ल की हाजत हो सिवाए हालते सफ़र के, यहां तक कि तुम गुस्ल कर लो, और अगर तुम मरीज़ हो या सफ़र में या तुम में से कोई जाए ज़रूर (बैतुलख़ला) से आए या तुम औ़रतों के पास गए (हम सुहबत हुए) फिर तुम ने पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो, मसह कर लो अपने मुँह और हाथों का, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। **(43)**

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मोल लेते हैं (इख़्तियार करते हैं) गुमराही, और चाहते हैं कि तुम रास्ते से भटक जाओ। **(44)**

और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है और अल्लाह काफ़ी है हिमायती, और अल्लाह काफ़ी है मददगार। **(45)**

बाज़ यहूदी लोग कलिमात ओ अलफ़ाज़ को उन की जगह से बदल देते हैं (तहरीफ़ करते हैं) और कहते हैं "हम ने सुना" और "नाफ़रमानी की" (कहते हैं हमारी) सुनो (तुम्हें) न सुनवाया जाए! और राइना (कहते हैं) अपनी ज़बानों को मोड़ कर दीन में ताने की नीयत से, और अगर वह कहते "हम ने सुना और इताअ़त की" (और कहते) "सुनिए और हम पर नज़र कीजिए" तो यह उन के लिए बेहतर होता और ज़ियादा दुरुस्त होता, लेकिन अल्लाह ने उन के कुफ़्र के सबब उन पर लानत की, पस वह ईमान नहीं लाते मगर थोड़े। **(46)**

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا

जो	तस्दीक़ करने वाला	हम ने नाज़िल किया	उस पर जो	ईमान लाओ	किताब दिए गए (अहले किताब)	वह लोग जो	ऐ

مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى اَدْبَارِهَآ

उन की पीठ	पर	फिर उलट दें	चेहरे	हम मिटा दें	कि	इस से पहले	तुम्हारे पास

اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ۭ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾

47	होकर (रहने वाला)	अल्लाह का हुक्म	और है	हफ़्ते वाले	हम ने लानत की	जैसे	हम उन पर लानत करें	या

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ

जिस को	उस के सिवा	जो	और बख़्शता है	शरीक ठहराए उस का	कि	नहीं बख़्शता	बेशक अल्लाह

يَّشَاۗءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾

48	बड़ा	गुनाह	पस उस ने बान्धा	अल्लाह का	शरीक ठहराया	और जो-जिस	वह चाहे

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۭ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ

जिसे	पाक करता है	बल्कि अल्लाह	अपने आप को	पाक मुक़द्दस कहते हैं	वह जो कि	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा

يَّشَاۗءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	बान्धते हैं	कैसा	देखो	49	धागे के बराबर	और उन पर ज़ुल्म न होगा	वह चाहता है

ع ٨ الْكَذِبَ ۭ وَكَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा	50	सरीह	गुनाह	यही	और काफ़ी है	झूट

اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ

और सरकश (शैतान)	बुत (जमा)	वह मानते हैं	किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया

وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَاۗءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	से	राहे रास्त पर	यह लोग	जिन लोगों ने कुफ़्र क्या (काफ़िर)	और कहते हैं

سَبِيْلًا ﴿٥١﴾ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يَّلْعَنِ

लानत करे	और जिस पर	उन पर अल्लाह ने लानत की	वह लोग जो	यही लोग	51	राह

اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ

सलतनत	से	कोई हिस्सा	उन का	क्या	52	कोई मददगार	तू पाएगा उस का	तो हरगिज़ नहीं	अल्लाह

فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ

लोग	वह हसद करते हैं	या	53	तिल बराबर	लोग	न दें	फिर उस वक़्त

عَلٰي مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ

सो हम ने दिया	अपना फ़ज़्ल	से	जो अल्लाह ने उन्हें दिया	पर

اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾

54	बड़ा	मुल्क	और उन्हें दिया	और हिक्मत	किताब	आले इब्राहीम (अ)

ऐ अहले किताब! ईमान लाओ उस पर जो हम ने नाज़िल किया उस की तस्दीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है उस से पहले कि हम चहरे मिटा डालें (मस्ख़ करदें) फिर उन (चहरों) को उलट दें उन की पीठ की तरफ़ या हम उन पर लानत करें जैसे "हफ़्ते वालों" पर लानत की, और अल्लाह का हुक्म (पूरा) हो कर रहने वाला है। (47)

बेशक अल्लाह (उस को) नहीं बख़्शता जो उस का शरीक ठहराए, और उस के सिवा जिस को चाहे बख़्श दे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया पस उस ने बड़ा गुनाह (बुहतान) बान्धा। (48)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? वह जो अपने आप को मुक़द्दस कहते हैं, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है मुक़द्दस बनाता है और उन पर खजूर की गुठली के रेशे (धागे) के बराबर भी ज़ुल्म न होगा। (49)

देखो! अल्लाह पर कैसा झूट (बुहतान) बान्धते हैं, और यही सरीह गुनाह काफ़ी है। (50)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मानते हैं बुतों को और शैतान को, और काफ़िरों को कहते हैं कि यह मोमिनों से ज़ियादा राह (रास्त) पर हैं। (51)

यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, और जिस पर अल्लाह लानत करे तो हरगिज़ तू उस का कोई मददगार नहीं पाएगा। (52)

क्या उन के पास सलतनत का कोई हिस्सा है? फिर उस वक़्त यह न दें लोगों को तिल बराबर भी। (53)

या लोगों से उस पर हसद करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें दिया अपने फ़ज़्ल से, सो हम ने दी है आले इब्राहीम (अ) को किताब और हिक्मत और उन्हें दिया है बड़ा मुल्क। (54)

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ

जहन्नम	और काफ़ी	उस से	रुका रहा	कोई	और उन में से	उस पर	कोई ईमान लाया	फिर उन में से

سَعِيْرًا ﴿۵۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا

जिस वक़्त	आग	हम उन्हें डालेंगे	अ़नक़रीब	हमारी आयतों का	कुफ़्र किया	जो लोग	बेशक	55	भड़कती हुई आग

نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ

अ़ज़ाब	ताकि वह चखें	उस के अ़लावा	खालें	हम बदल देंगे	उन की खालें	पक जाएंगी

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ الربع

नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	और वह लोग जो	56	हिक्मत वाला	ग़ालिब	है	बेशक अल्लाह

سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ

हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	अ़नक़रीब हम उन्हें दाख़िल करेंगे

لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ؗ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	57	घनी	छाऊँ	और हम उन्हें दाख़िल करेंगे	पाक सुथरी	बीवियां	उस में	उन के लिए

يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ

लोग	दरमियान	तुम फ़ैसला करने लगो	और जब	अमानत वाले	तरफ़ (को)	अमानतें	पहुंचा दो	कि	तुम्हें हुक्म देता है

اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

है	बेशक अल्लाह	इस से	नसीहत करता है तुम्हें	अच्छी	बेशक अल्लाह	इन्साफ़ से	तुम फ़ैसला करो	तो

سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ﴿۵۸﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا

और इताअ़त करो	इताअ़त करो अल्लाह की	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	58	देखने वाला	सुनने वाला

الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ

तो उस को रुजूअ़ करो	किसी बात में	तुम झगड़ पड़ो	फिर अगर	तुम में से	और साहिबे हुकूमत	रसूल

اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ

और रोज़े आख़िरत	अल्लाह पर	तुम ईमान रखते हो	अगर	और रसूल (स)	अल्लाह की तरफ़

ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۵۹﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ ع ۸ ۵

दावा करते हैं	वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा	59	अन्जाम	और बहुत अच्छा	बेहतर	यह

اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ

वह चाहतें हैं	आप (स) से पहले	और जो नाज़िल किया गया	आप (स) की तरफ़	उस पर जो नाज़िल किया गया	ईमान लाए	कि वह

اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا

वह न मानें	कि	हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका	तागूत (सरकश)	तरफ़ (पास)	मुक़दमा ले जाएं	कि

بِهٖ ؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿۶۰﴾

60	दूर	गुमराही	उन्हें बहका दे	कि	शैतान	और चाहता है	उस को

फिर उन में से कोई उस पर ईमान लाया और उन में से कोई रुका (ठटका) रहा, और जहन्नम काफ़ी है भड़कती हुई आग। (55)

जिन लोगों ने हमारी आयतों का कुफ़्र किया बेशक उन्हें हम अ़नक़रीब आग में डाल देंगे, जिस वक़्त उन की खालें पक (गल) जाएंगी हम उस के अ़लावा (दूसरी) बदल देंगे ताकि वह अ़ज़ाब चखें, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (56)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, हम अ़नक़रीब उन्हें बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं और उस में रहेंगे हमेशा हमेशा, उन के लिए उस में पाक सुथरी बीवियां हैं, और हम उन्हें घनी छाऊँ (साया) में दाख़िल करेंगे। (57)

बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें अमानत वालों को पहुँचा दो, और जब तुम लोगों के दरमियान फ़ैसला करने लगो तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो, बेशक अल्लाह तुम्हें अच्छी नसीहत करता है, बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। (58)

ऐ ईमान वालो! इताअ़त करो अल्लाह की और इताअ़त करो रसूल (स) की और उन की जो तुम में से साहिबे हुकूमत हैं, फिर अगर तुम झगड़ पड़ो किसी बात में तो उस को अल्लाह और रसूल (स) की तरफ़ रुजूअ़ करो अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यह बेहतर है और उस का अन्जाम बहुत अच्छा है। (59)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वह उस पर ईमान ले आए जो आप (स) पर नाज़िल किया गया और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया वह चाहतें हैं कि (अपना) मुक़दमा तागूत (सरकश) शैतान के पास ले जाएं हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि वह उस को न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें बहका कर दूर गुमराही (में डाल दे)। (60)

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ

रसूल (स)	और तरफ़	जो अल्लाह ने नाज़िल किया	तरफ़	आओ	उन्हें	कहा जाता है	और जब

رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿٦١﴾ فَكَيْفَ اِذَآ

जब	फिर कैसी	61	रुक कर	आप से	हटते हैं	मुनाफ़िक़ीन	आप देखेंगे

اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ

फिर वह आएं आप (स) के पास	उन के हाथ	आगे भेजा	उस के सबब जो	कोई मुसीबत	उन्हें पहुँचे

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ اِحْسَانًا وَّتَوْفِيْقًا ﴿٦٢﴾ اُولٰٓئِكَ

यह लोग	62	और मुवाफ़क़त	भलाई	सिवाए (सिर्फ़)	हम ने चाहा	कि	अल्लाह की	क़सम खाते हुए

الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ

और उन को नसीहत करें	उन से	तो आप (स) तग़ाफ़ुल करें	उन के दिलों में	जो	अल्लाह जानता है	वह जो कि

وَقُلْ لَّهُمْ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيْغًا ﴿٦٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ

कोई रसूल	हम ने भेजा	और नहीं	63	असर कर जाने वाली बात	उन के हक़ में	उन से	और कहें

اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

अपनी जानों पर	जब उन्हों ने ज़ुल्म किया	यह लोग	और अगर	अल्लाह के हुक्म से	ताकि इताअ़त की जाए	मगर

جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ

रसूल	उन के लिए	और मग़फ़िरत चाहता	फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहते वह	वह आते आप (स) के पास

لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

वह मोमिन न होंगे	पस क़सम है आप के रब की	64	मेह्रबान	तौबा कुबूल करने वाला	तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को

حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

अपने दिलों में	वह न पाएं	फिर	उन के दरमियान	झगड़ा उठे	उस में जो	आप को मुन्सिफ़ बनाएं	जब तक

حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا

हम लिख देते (हुक्म करते)	और अगर	65	ख़ुशी से	और तसलीम कर लें	आप (स) फ़ैसला करें	उस से जो	कोई तंगी

عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِاخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ

अपने घर	से	या निकल जाओ	अपने आप	क़त्ल करो तुम	कि	उन पर

مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ

नसीहत की जाती है	जो	करते	यह लोग	और अगर	उन से	सिवाए चन्द एक	वह यह न करते

بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ﴿٦٦﴾ وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ

हम उन्हें देते	और उस सूरत में	66	साबित रखने वाला	और ज़ियादा	उन के लिए	बेहतर	अलबत्ता होता	उस की

مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٦٧﴾ وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾

68	सीधा	रास्ता	और हम उन्हें हिदायत देते	67	बड़ा (अ़ज़ीम)	अजर	अपने पास से

और जब उन्हें कहा जाता है कि जो अल्लाह ने नाज़िल किया उस की तरफ़ आओ और रसूल (स) की तरफ़ तो आप (स) मुनाफ़िक़ों को देखेंगे कि वह रुक कर आप (स) से हटते हैं (पहलु तही करते हैं)। (61)

फिर कैसी (नदामत होगी) जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा फिर वह आप (स) के पास अल्लाह की क़सम खाते हुए आएं कि हम ने सिर्फ़ भलाई चाही थी और मुवाफ़क़त। (62)

यह लोग हैं कि अल्लाह जानता है जो उन के दिलों में है, तो आप (स) तग़ाफ़ुल करें उन से। और आप (स) उन को नसीहत करें और उन से उन के हक़ में असर कर जाने वाली बात कहें। (63)

और हम ने नहीं भेजा कोई रसूल मगर इस लिए कि अल्लाह के हुक्म से उस की इताअ़त की जाए, और यह लोग जब उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था अगर वह आप (स) के पास आते, फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहते और उन के लिए रसूल (स) अल्लाह से मग़फ़िरत चाहते तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को तौबा कुबूल करने वाला मेह्रबान। (64)

पस क़सम है आप (स) के रब की वह मोमिन न होंगे जब तक आप (स) को मुन्सिफ़ न बनाएं उस झगड़े में जो उन के दरमियान उठे, फिर वह अपने दिलों में आप (स) के फ़ैसले से कोई तंगी न पाएं और उस को ख़ुशी से (पूरी तरह) तसलीम करलें। (65)

और अगर हम उन पर लिख देते (फ़र्ज़ कर देते) कि अपने आप को क़त्ल कर डालो या अपने घर बार (छोड़ कर) निकल जाओ तो उन में से चन्द एक के सिवा वह (कभी ऐसा) न करते, और अगर यह लोग वह करें जिस की उन्हें नसीहत की जाती है तो यह उन के लिए बेहतर होता और (दीन में) ज़ियादा साबित रखने वाला होता। (66)

और उस सूरत में हम उन्हें अपने पास से बड़ा अजर देते। (67)

और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देते। (68)

और जो इताअ़त करे अल्लाह और रसूल (स) की तो यही लोग हैं उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह तआ़ला ने इन्आम किया (यानी) अंबिया और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सालिहीन (नेक बन्दे), और यह अच्छे साथी हैं। **(69)**

यह अल्लाह की तरफ़ से फ़ज़्ल है, और अल्लाह काफ़ी है जानने वाला। **(70)**

ऐ ईमान वालो! अपने बचाओ (का सामान, हथियार) ले लो, फिर जुदा जुदा (दस्तों की सूरत में) या सब इकटठे हो कर कूच करो। **(71)**

बेशक तुम में (कोई ऐसा भी है) जो ज़रूर देर लगादेगा, फिर अगर तुम्हें पहुँचे कोई मुसीबत तो कहे कि अल्लाह ने मुझ पर इन्आम किया कि मैं उन के साथ न था। **(72)**

और तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से कोई फ़ज़्ल (नेमत) पहुँचे तो ज़रूर कहेगा, गोया (जैसे) कि न थी तुम्हारे और उस के दरमियान कोई दोस्ती, "ऐ काश! मैं उन के साथ होता तो बड़ी मुराद पाता"। **(73)**

सो चाहिए कि अल्लाह के रास्ते में लड़ें वह लोग जो दुनिया की ज़िन्दगी बेचते (क़ुरबान करते) हैं आख़िरत के बदले, और जो अल्लाह के रास्ते में लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब आए हम अ़नक़रीब उसे बड़ा अजर देंगे। **(74)**

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में नहीं लड़ते कमज़ोर (बेबस) मर्दों और औ़रतों और बच्चों (की ख़ातिर) जो दुआ़ कर रहे हैं: ऐ हमारे रब! हमें इस बस्ती से निकाल जिस के रहने वाले ज़ालिम हैं और बनादे हमारे लिए अपने पास से हिमायती और बनादे हमारे लिए अपने पास से मददगार। **(75)**

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ

इन्आम किया	उन लोगों के साथ	तो यही लोग	और रसूल	अल्लाह	इताअ़त करे	और जो

اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ

और सालिहीन	और शुहदा	और सिद्दीक़ीन	अंबिया	से (यानी)	उन पर	अल्लाह

وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى

और काफ़ी	अल्लाह से	फ़ज़्ल	यह	69	साथी	यह लोग	और अच्छे

بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ع ١١ / ٦

फिर निकलो	अपने बचाओ (हथियार)	ले लो	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	70	जानने वाला	अल्लाह

ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾ وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ

फिर अगर	ज़रूर देर लगादेगा	वह है जो	तुम में	और बेशक	71	सब	या निकलो (कूच करो)	जुदा जुदा

اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ

उन के साथ	मैं न था	जब	मुझ पर	बेशक अल्लाह ने इन्आम किया	कहे	कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँचे

شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾ وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ

न थी	गोया	तो ज़रूर कहेगा	अल्लाह से	कोई फ़ज़्ल	तुम्हें पहुँचे	और अगर	72	हाज़िर-मौजूद

بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ

तो मुराद पाता	उन के साथ	मैं होता	ऐ काश मैं	कोई दोस्ती	और उस के दरमियान	तुम्हारे दरमियान

فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٣﴾ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ

बेचते हैं	वह जो कि	अल्लाह का रास्ता	में	सो चाहिए कि लड़ें	73	बड़ी	मुराद

الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	लड़े	और जो	आख़िरत के बदले	दुनिया	ज़िन्दगी

فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾ وَمَا لَكُمْ

तुम्हें	और क्या	74	बड़ा अजर	हम उसे देंगे	अ़नक़रीब	ग़ालिब आए	या	फिर मारा जाए

لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ

मर्द (जमा)	से	और कमज़ोर (बेबस)	अल्लाह का रास्ता	में	तुम नहीं लड़ते

وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا

हमें निकाल	ऐ हमारे रब	कहते हैं (दुआ़)	जो	और बच्चे	और औ़रतें

مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ

से	हमारे लिए	और बनादे	उस के रहने वाले	ज़ालिम	बस्ती	इस	से

لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾

75	मददगार	अपने पास	से	हमारे लिए	और बनादे	(हिमायती) दोस्त	अपने पास

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	अल्लाह का रास्ता	में	वह लड़ते हैं	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)

يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ

शैतान	दोस्त (साथी)	सो तुम लड़ो	तागूत (सरकश)	रास्ता	में	वह लड़ते हैं

ع ١٠ / ٦ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۚ ﴿٧٦﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ

कहा गया	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	76	कमज़ोर (बोदा)	है	शैतान	चाल	बेशक

لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا

फिर जब	ज़कात	और अदा करो	नमाज़	और क़ाइम करो	अपने हाथ	रोक लो	उन को

كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ

जैसे अल्लाह का डर	लोग	डरते हैं	उन में से	एक फ़रीक़	जब	लड़ना (जिहाद)	उन पर फ़र्ज़ हुआ

اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ

लड़ना (जिहाद)	हम पर	तू ने क्यों लिखा	ऐ हमारे रब	और वह कहते हैं	डर	ज़ियादा	या

لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ؕ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ

और आख़िरत	थोड़ा	दुनिया	फ़ाइदा	कह दें	थोड़ी	मुद्दत	तक	हमें ढील दी	क्यों न

خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۫ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا

तुम होगे	जहां कहीं	77	धागे बराबर	और न तुम पर ज़ुल्म होगा	परहेज़गार के लिए	बेहतर

يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِىْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ

उन्हें पहुँचे	और अगर	मज़बूत	बुर्जों में	अगरचे तुम हो	मौत	तुम्हें पा लेगी

حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ

कुछ बुराई	उन्हें पहुँचे	और अगर	अल्लाह के पास (तरफ़)	से	यह	वह कहते हैं	कोई भलाई

يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ

तो क्या हुआ	अल्लाह के पास (तरफ़)	से	सब	कह दें	आप (स) की तरफ़ से	से	यह	वह कहते हैं

هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿٧٨﴾ مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ

कोई भलाई	तुझे पहुँचे	जो	78	बात	कि समझें	नहीं लगते	क़ौम	इस

فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ

और हम ने तुम्हें भेजा	तो तेरे नफ़्स से	कोई बुराई	तुझे पहुँचे	और जो	सो अल्लाह से

لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٧٩﴾ مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ

रसूल (स)	इताअत की	जो-जिस	79	गवाह	अल्लाह	और काफ़ी है	रसूल	लोगों के लिए

فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿٨٠﴾ ؕ

80	निगहबान	उन पर	हम ने आप (स) को भेजा	तो नहीं	रू गर्दानी की	और जो-जिस	अल्लाह	पस तहक़ीक़ इताअत की

ईमान लाने वाले अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं और काफ़िर लड़ते हैं तागूत (सरकश मुफ़्सिद) के रास्ते में, सो तुम शैतान के साथियों से लड़ो, बेशक शैतान की चाल कमज़ोर (बोदा) है। **(76)**

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कहा गया अपने हाथ रोक लो और क़ाइम करो नमाज़ और ज़कात अदा करो, फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ तो उन में से एक फ़रीक़ लोगों से डरता है जैसे अल्लाह का डर हो या उस से भी ज़ियादा डर, और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! तू ने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया, हमें और थोड़ी मुद्दत क्यों न मुहलत दी? कह दें, दुनिया का फ़ाइदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है परहेज़गार के लिए, और तुम पर ज़ुल्म न होगा धागे बराबर (भी), **(77)**

तुम जहां कहीं होगे तुम्हें मौत पा लेगी अगरचे तुम होगे बुर्जों में मज़बूत, और अगर उन्हें कोई भलाई पहुँचे तो वह कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से है, और अगर उन्हें कुछ बुराई पहुँचे तो कहते हैं कि यह आप (स) की तरफ़ से है। आप (स) कह दें सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है, उस क़ौम को (उन लोगों को) क्या हो गया है कि यह बात समझते नहीं लगते (बात समझते मअ़्लूम नहीं होते) **(78)**

जो तुम्हें कोई भलाई पहुँचे सो वह अल्लाह की तरफ़ से है, और जो तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह तुम्हारे नफ़्स से है, और हम ने तुम्हें लोगों के लिए रसूल बना कर भेजा है, और अल्लाह काफ़ी है गवाह। **(79)**

जिस ने रसूल की इताअत की पस तहक़ीक़ उस ने अल्लाह की इताअत की, और जिस ने रू गर्दानी की तो हम ने आप (स) को उन पर निगहबान नहीं भेजा। **(80)**

वह (मुँह से तो) यह कहते हैं कि हम ने माना, फिर जब बाहर जाते हैं आप (स) के पास से तो उन में से एक गिरोह रात को उस के ख़िलाफ़ मशवरा करता है जो वह कह चुके, और अल्लाह लिख लेता है जो वह रात को मशवरे करते हैं, आप (स) उन से मुँह फेर लें और अल्लाह पर भरोसा करें, और अल्लाह काफ़ी है कारसाज़। (81)

फिर क्या वह कुरआन पर ग़ौर नहीं करते? और अगर अल्लाह के सिवा किसी और के पास से होता तो उस में ज़रूर बहुत इख़तिलाफ़ पाते। (82)

और जब उन के पास कोई अम्न की ख़बर आती है या ख़ौफ़ की तो उसे मशहूर कर देते हैं और अगर उसे पहुँचाते रसूल की तरफ़ और अपने हाकिमों की तरफ़ तो जो लोग उन में से तहक़ीक़ कर लिया करते हैं उस को जान लेते। और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता तुम पर और उस की रहमत (न होती) तो चन्द एक के सिवा तुम शैतान के पीछे लग जाते। (83)

पस आप (स) अल्लाह की राह में लड़ें, आप (स) मुकल्लफ़ नहीं मगर अपनी जान के, और मोमिनों को आमादा करें, क़रीब है कि अल्लाह रोक दे काफ़िरों की जंग (का ज़ोर) और अल्लाह की जंग सख़्त तरीन है और उस की सज़ा सब से सख़्त है। (84)

जो कोई नेक बात में सिफ़ारिश करे उस के लिए उस से हिस्सा होगा, और जो कोई सिफ़ारिश करे बुरी बात में उस को उस का बोझ (हिस्सा) मिलेगा, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (85)

और जब तुम्हें कोई दुआ दे (सलाम करे) तो तुम उस से बेहतर दुआ दो या वही कह दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब करने वाला है। (86)

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह जरूर तुम्हें क़ियामत के दिन इकटठा करेगा जिस में कोई शक नहीं, और कौन ज़ियादा सच्चा है बात में अल्लाह से। (87)

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ

एक गिरोह	रात को मशवरा करता है	आप (स) के पास	से	बाहर जाते हैं	फिर जब	(हम ने) हुक्म माना	और वह कहते हैं

مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ ۚ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ ۚ فَاَعْرِضْ

मुँह फेरलें	जो वह रात को मशवरे करते हैं	लिख लेता है	और अल्लाह	कहते हैं	उस के ख़िलाफ़ जो	उन से

عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيلًا ﴿٨١﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ

फिर क्या वह ग़ौर नहीं करते?	81	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी है	अल्लाह पर	और भरोसा करें	उन से

الْقُرْاٰنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا

इख़तिलाफ़	उस में	ज़रूर पाते	अल्लाह के सिवा	पास	से	और अगर होता	कुरआन

كَثِيرًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوا بِهٖ ۚ

उसे	मशहूर कर देते हैं	ख़ौफ़	या	अम्न	से (की)	कोई ख़बर	उन के पास आती है	और जब	82	बहुत

وَلَوْ رَدُّوهُ اِلَى الرَّسُولِ وَاِلٰٓى اُولِي الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ

जो लोग	तो उस को जान लेते	अपने में से	हाकिम	और तरफ़	रसूल की तरफ़	उसे पहुँचाते	और अगर

يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۚ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ

तुम पीछे लग जाते	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	उन से	सही नतीजा निकाल लिया करते हैं

الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيلًا ﴿٨٣﴾ فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا

मगर	मुकल्लफ़ नहीं	अल्लाह की राह	में	पस लड़ें	83	चन्द एक	सिवाए	शैतान

نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِينَ

जिन लोगों ने	जंग	रोक दे	कि	क़रीब है कि अल्लाह	मोमिन (जमा)	और आमादा करें	अपनी ज़ात

كَفَرُوا ۚ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ تَنْكِيلًا ﴿٨٤﴾ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً

सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करे	जो	84	सज़ा देना	और सब से सख़्त	जंग	सख़्त तरीन	और अल्लाह	कुफ़्र किया (काफ़िर)

حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهُ نَصِيبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهُ

होगा - उस के लिए	बुरी बात	सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करे	और जो	उस में से	हिस्सा	होगा - उस के लिए	नेक बात

كِفْلٌ مِّنْهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيتًا ﴿٨٥﴾ وَاِذَا حُيِّيتُمْ

तुम्हें दुआ दे	और जब	85	कुदरत रखने वाला	हर चीज़	पर	अल्लाह	और है	उस से	बोझ (हिस्सा)

بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوهَا ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى

पर (का)	है	बेशक अल्लाह	या वही लौटा दो (कह दो)	उस से	बेहतर	तो तुम दुआ दो	किसी दुआ (सलाम) से

كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿٨٦﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى

النصف

तरफ़	वह तुम्हें ज़रूर इकटठा करेगा	उस के सिवा	नहीं इबादत के लाइक़	अल्लाह	86	हिसाब करने वाला	हर चीज़

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيثًا ﴿٨٧﴾ ع

ع ١١ ٨

87	बात में	अल्लाह से	ज़ियादा सच्चा	और कौन?	इस में	नहीं शक	रोज़े क़ियामत

فَمَا لَكُمْ فِى الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ

उस के सबब जो उन्हों ने कमाया (किया)	उन्हें उलट दिया (औन्धा कर दिया)	और अल्लाह	दो फ़रीक़	मुनाफ़िक़ीन के बारे में	सो क्या हुआ तुम्हें?

اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

गुमराह करे अल्लाह	और जो-जिस	अल्लाह ने गुमराह किया	जो-जिस	कि राह पर लाओ	क्या तुम चाहते हो?

فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا

वह काफ़िर हुए	जैसे	काश तुम काफ़िर हो जाओ	वह चाहते हैं	88	कोई राह	उस के लिए	पस तुम हरगिज़ न पाओगे

فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا

वह हिज्रत करें	यहां तक कि	दोस्त	उन से	पस तुम न बनाओ	बराबर	तो तुम हो जाओ

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ

जहां कहीं	और उन्हें क़त्ल करो	तो उन को पकड़ो	मुँह मोड़ें	फिर अगर	अल्लाह की राह	में

وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾ اِلَّا

मगर	89	मददगार	और न	दोस्त	उन से	बनाओ	और न	तुम उन्हें पाओ

الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ

या	अ़हद (मुआ़हदा)	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	क़ौम	तरफ़ (से)	मिल गए हैं (तअ़ल्लुक़ रखते हैं)	जो लोग

جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا

लड़ें	या	वह तुम से लड़ें	कि	उन के सीने (दिल)	तंग हो गए	वह तुम्हारे पास आएं

قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ

फिर अगर	तो वह तुम से ज़रूर लड़ते	तुम पर	उन्हें मुसल्लत कर देता	चाहता अल्लाह	और अगर	अपनी क़ौम से

اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ

सुलह	तुम्हारी तरफ़	और डालें	वह तुम से लड़ें	फिर न	तुम से किनारा कश हों

فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿۹۰﴾ سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ

और लोग	अब तुम पाओगे	90	कोई राह	उन पर	तुम्हारे लिए	अल्लाह	तो नहीं दी

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ

फ़ित्ने की तरफ़	जब कभी लौटाए (बुलाए जाते हैं)	अपनी क़ौम	और अम्न में रहें	कि तुम से अम्न में रहें	वह चाहते हैं

اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ

तुम्हारी तरफ़	और (न) डालें वह	तुम से किनारा कशी न करें	पस अगर	उस में	पलट जाते हैं

السَّلَمَ وَيَكُفُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ

जहां कहीं	और उन्हें क़त्ल करो	तो उन्हें पकड़ो	अपने हाथ	और रोकें	सुलह

ع ١٢ ٩ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۹۱﴾

91	खुली	सनद (हुज्जत)	उन पर	तुम्हारे लिए	हम ने दी	और यही लोग	तुम उन्हें पाओ

सो तुम्हें क्या हो गया है? मुनाफ़िक़ीन के बारे में दो गिरोह (हो रहे हो) और अल्लाह ने उन्हें औन्धा कर दिया उस के सबब जो उन्हों ने किया, क्या तुम चाहते हो कि उसे राह पर लाओ जिस को अल्लाह ने गुमराह किया? और जिस को अल्लाह गुमराह करे तुम हरगिज़ उस के लिए कोई राह न पाओगे। **(88)**

वह चाहते हैं काश तुम (भी) काफ़िर हो जाओ जैसे वह काफ़िर हुए तो तुम बराबर हो जाओ। पस तुम उन में से (किसी को) दोस्त न बनाओ यहां तक कि वह हिज्रत करें अल्लाह की राह में, फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो तुम जहां कहीं उन्हें पाओ पकड़ो और क़त्ल करो, और उन में से (किसी को) न दोस्त बनाओ न मददगार, **(89)**

मगर जो लोग तअ़ल्लुक़ रखते हैं (ऐसी) क़ौम से कि तुम्हारे और उन के दरमियान मुआ़हदा है, या तुम्हारे पास आएं (उस हाल में) कि तंग हो गए हैं उन के दिल (उस बात से) कि तुम से लड़ें या अपनी क़ौम से लड़ें, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर मुसल्लत कर देता तो वह तुम से ज़रूर लड़ते, फिर अगर वह तुम से किनारा कश रहें फिर तुम से न लड़ें और तुम्हारी तरफ़ सुलह (का पयाम) डालें, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर (सताने की) कोई राह नहीं रखी। **(90)**

अब तुम और लोग पाओगे जो चाहते हैं कि वह तुम से (भी) अम्न में रहें और अपनी क़ौम से (भी) अम्न में रहें, जब कभी फ़ित्ना (फ़साद) की तरफ़ बुलाए जाते हैं तो उस में पलट जाते हैं, पस अगर तुम से किनारा कशी न करें और वह न डालें तुम्हारी तरफ़ (पैग़ामे) सुलह, और (न) रोकें अपने हाथ, तो उन्हें पकड़ो और क़त्ल करो जहां कहीं तुम उन्हें पाओ, और यही लोग हैं जिन पर हम ने तुम्हें खुली सनद (हुज्जत) दी। **(91)**

और नहीं किसी मुसलमान के (शायां) कि वह किसी मुसलमान को क़त्ल कर दे मगर ग़लती से। और जो किसी मुसलमान को क़त्ल करे ग़लती से तो वह एक ग़ुलाम आज़ाद करे और ख़ून बहा उस के वारिसों के हवाले कर दे मगर यह कि वह माफ़ कर दें। फिर अगर वह तुम्हारी दुश्मन क़ौम से हो और वह ख़ुद मुसलमान हो तो आज़ाद करे एक मुसलमान ग़ुलाम। और अगर ऐसी क़ौम से हो कि उन के और तुम्हारे दरमियान मुआ़हदा है तो ख़ून बहा उस के वारिसों के हवाले कर दे और एक मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद कर दे। सो जो न पाए (मयस्सर न हो) तो दो माह लगातार रोज़े रखे, यह तौबा है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। **(92)**

और जो कोई किसी मुसलमान को दानिस्ता क़त्ल कर दे तो उस की सज़ा जहन्नम है, वह हमेशा रहेगा उस में, और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उस की लानत, और उस के लिए (अल्लाह ने) बड़ा अ़ज़ाब तैयार कर रखा है **(93)**

ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) सफ़र करो तो तहक़ीक़ कर लिया करो, और जो तुम्हें सलाम करे उसे न कहो कि तू मुसलमान नहीं है, तुम चाहते हो दुनिया की ज़िन्दगी का सामान, फिर अल्लाह के पास बहुत ग़नीमतें हैं, तुम उसी तरह थे इस से पहले तो अल्लाह ने तुम पर एहसान किया, सो तहक़ीक़ कर लिया करो, बेशक जो तुम करते हो उस से अल्लाह ख़ूब बाख़बर है। **(94)**

बग़ैर उज़्र बैठ रहने वाले मोमिनीन और वह बराबर नहीं जो अल्लाह की राह में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वाले हैं, अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी दरजे में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर, और हर एक को अल्लाह ने अच्छा वादा दिया है, और अल्लाह ने मुजाहिदों को बैठ रहने वालों पर फ़ज़ीलत दी है अजरे अ़ज़ीम (के एतिबार से)। **(95)**

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا

ग़लती से	किसी मुसलमान	क़त्ल करे	और जो	मगर ग़लती से	किसी मुसलमान	कि वह क़त्ल करे	किसी मुसलमान के लिए	है	और नहीं

فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ۭ فَاِنْ

फिर अगर	वह माफ़ कर दें	यह कि	मगर	उस के वारिसों को	हवाले करना	और ख़ून बहा	मुसलमान	एक गर्दन (ग़ुलाम)	तो आज़ाद करे

كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۭ وَاِنْ

और अगर	मुसलमान	एक गर्दन (ग़ुलाम)	तो आज़ाद कर दे	मुसलमान	और वह	तुम्हारी	दुश्मन क़ौम	से	हो

كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ

उस के वारिसों को	हवाले करना	ख़ून बहा	अ़हद (मुआ़हदा)	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	ऐसी क़ौम से	हो

وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۡ

लगातार	दो माह	तो रोज़े रखे	न पाए	सो जो	मुसलमान	एक गर्दन (ग़ुलाम)	और आज़ाद करना

تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾ وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا

दानिस्ता (क़स्दन)	किसी मुसलमान को	क़त्ल कर दे	और जो कोई	92	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	अल्लाह से	तौबा

فَجَزَاۗؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ

उस के लिए तैयार कर रखा है	और उस की लानत	उस पर	और अल्लाह का ग़ज़ब	उस में	हमेशा रहेगा	जहन्नम	तो उस की सज़ा

عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह की राह	में	तुम सफ़र करो	जब	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	93	बड़ा	अ़ज़ाब

فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ

तुम चाहते हो	मुसलमान	तू नहीं है	सलाम	तुम्हारी तरफ़	डाले (करे)	जो कोई	तुम कहो	और न	तो तहक़ीक़ कर लो

عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ۭ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ

इस से पहले	तुम थे	उसी तरह	बहुत	ग़नीमतें	फिर अल्लाह के पास	दुनिया की ज़िन्दगी	असबाब (सामान)

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾

94	ख़ूब बाख़बर	तुम करते हो	उस से जो	है	बेशक अल्लाह	सो तहक़ीक़ कर लो	तुम पर	तो एहसान किया अल्लाह

لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ

और मुजाहिद (जमा)	उज़्र वाले (मअ़ज़ूर)	बग़ैर	मोमिनीन	से	बैठ रहने वाले	बराबर नहीं

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ

जिहाद करने वाले	अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	और अपनी जानें	अपने मालों से	अल्लाह की राह	में

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَي الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ۭ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ

अल्लाह ने वादा दिया	और हर एक	दरजे	बैठ रहने वाले	पर	और अपनी जानें	अपने मालों से

الْحُسْنٰى ۭ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَي الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٩٥﴾

95	अजरे अ़ज़ीम	बैठ रहने वाले	पर	मुजाहिदीन	और अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	अच्छा

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	और रहमत	और बख़्शिश	उस की तरफ़ से	दरजे

ع ١٣ ٥ ١٠ رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ ظَالِمِيْٓ

ज़ुल्म करते थे	फ़रिश्ते	उन की जान निकालते हैं	वह लोग जो	बेशक	96	मेहरबान

اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ۭ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ

बेबस	वह कहते हैं हम थे	तुम थे	किस (हाल) में	वह कहते हैं	अपनी जानें

فِي الْاَرْضِ ۭ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً

वसीअ़	अल्लाह की ज़मीन	क्या न थी	वह कहते हैं	ज़मीन (मुल्क)	में

فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ۭ فَاُولٰۗىِٕكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَسَاۗءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾

97	पहुँचने की जगह	और बुरा है	जहन्नम	उन का ठिकाना	सो यह लोग	पस तुम हिज्रत कर जाते उस में

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاۗءِ وَالْوِلْدَانِ

और बच्चे	और औ़रतें	मर्द (जमा)	से	बेबस	मगर

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾

98	कोई रास्ता	पाते हैं	और न	कोई तदबीर	नहीं कर सकते

فَاُولٰۗىِٕكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ

और है अल्लाह	उन से (उन को)	कि माफ़ फ़रमाए	उम्मीद है कि अल्लाह	सो ऐसे लोग हैं

عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ

वह पाएगा	अल्लाह का रास्ता	में	हिज्रत करे	और जो	99	बख़्शने वाला	माफ़ करने वाला

فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ۭ وَمَنْ يَّخْرُجْ

निकले	और जो	और कुशादगी	बहुत (वाफ़िर) जगह	ज़मीन	में

مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ

आ पकड़े उस को	फिर	और उस का रसूल	अल्लाह की तरफ़	हिज्रत कर के	अपना घर	से

الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَي اللّٰهِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	अल्लाह पर	उस का अजर	तो साबित हो गया	मौत

ع ١٤ ١١ رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ

तुम पर	पस नहीं	ज़मीन में	तुम सफ़र करो	और जब	100	मेहरबान

جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ڰ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ

तुम्हें सताएंगे	कि	तुम को डर हो	अगर	नमाज़	से	क़सर करो	कि	कोई गुनाह

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾

101	दुश्मन खुले	तुम्हारे	हैं	काफ़िर (जमा)	बेशक	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

उस की तरफ़ से दरजे हैं और बख़्शिश और रहमत है, और अल्लाह है बख़्शने वाला मेहरबान। **(96)**

बेशक वह लोग जिन की फ़रिश्ते जान निकालते हैं (उस हाल में कि वह) ज़ुल्म करते थे अपनी जानों पर, वह (फ़रिश्ते) कहते हैं तुम किस हाल में थे? वह कहते हैं कि हम बेबस थे इस मुल्क में, (फ़रिश्ते) कहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन वसीअ़ न थी? पस तुम उस में हिज्रत कर जाते, सो यही लोग हैं उन का ठिकाना जहन्नम है और वह पहुँचने (पलटने) की बुरी जगह है। **(97)**

मगर जो बेबस हैं मर्द और औ़रतें और बच्चे कि कोई तदबीर नहीं कर सकते और न कोई रास्ता पाते हैं, **(98)**

सो उम्मीद है कि ऐसे लोगों को अल्लाह माफ़ फ़रमाए, और अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला। **(99)**

और जो अल्लाह के रास्ते में हिज्रत करे वह पाएगा ज़मीन में बहुत (वाफ़िर) जगह और कुशादगी, और जो अपने घर से हिज्रत कर के निकले अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़, फिर उस को मौत आ पकड़े तो उस का अजर अल्लाह पर साबित हो गया, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। **(100)**

और जब तुम मुल्क में सफ़र करो, पस नहीं तुम पर कोई गुनाह कि तुम नमाज़ क़सर करो (कम कर लो) अगर तुम को डर हो कि तुम्हें सताएंगे काफ़िर, बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। **(101)**

और जब आप (स) उन में मौजूद हों, फिर उन के लिए नमाज़ क़ाइम करें (नमाज़ पढ़ाने लगें) तो चाहिए कि उन में से एक जमाअ़त आप के साथ खड़ी हो और चाहिए कि वह अपने हथियार ले लें, फिर जब वह सिज्दा कर लें तो तुम्हारे पीछे हो जाएं, और (अब) आए दूसरी जमाअ़त (जिस ने) नमाज़ नहीं पढ़ी, पस वह आप (स) के साथ नमाज़ पढ़ें, और चाहिए कि वह लिए रहें अपना बचाओ और अपना अस्लिहा, काफ़िर चाहते हैं कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने सामान से ग़ाफ़िल हो तो तुम पर यकबारगी झुक पड़ें (हमला कर दें), और तुम पर गुनाह नहीं अगर तुम्हें बारिश के सबब तक्लीफ़ हो या तुम बीमार हो कि तुम अपना अस्लिहा उतार रखो, और अपना बचाओ ले लो, बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। **(102)**

फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुए, फिर जब तुम मुत्मइन (ख़ातिर जमा) हो जाओ तो (हस्बे दस्तूर) नमाज़ क़ाइम करो, बेशक नमाज़ मोमिनों पर (बक़ैदे वक़्त) मुक़र्ररा औक़ात में फ़र्ज़ है। **(103)**

और कुफ़्फ़ार का पीछा (तआ़क़ुब) करने में हिम्मत न हारो, अगर तुम्हें दुख पहुँचता है तो बेशक उन्हें (भी) दुख पहुँचता है जैसे तुम्हें दुख पहुँचता है, और तुम अल्लाह से उम्मीद रखते हो जो वह उम्मीद नहीं रखते, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। **(104)**

बेशक हम ने आप (स) की तरफ़ किताब नाज़िल की सच्ची ताकि आप लोगों के दरमियान फ़ैसला कर दें जो आप को अल्लाह दिखा दे (सुझा दे) और आप न हों दग़ाबाज़ों के तरफ़दार। **(105)**

وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآىِٕفَةٌ

एक जमाअ़त	तो चाहिए कि खड़ी हो	नमाज़	उन के लिए	फिर क़ाइम करें	उन में	आप हों	और जब

مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا

तो हो जाएं	वह सिज्दा कर लें	फिर जब	अपने हथियार	और चाहिए कि वह ले लें	आप (स) के साथ	उन में से

مِنْ وَّرَآىِٕكُمْ ۠ وَلْتَاْتِ طَآىِٕفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا

पस वह नमाज़ पढ़ें	नमाज़ नहीं पढ़ी	दूसरी	जमाअ़त	और चाहिए कि आए	तुम्हारे पीछे

مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ

चाहते हैं जिन लोगों ने	और अपना अस्लिहा	अपना बचाओ	और चाहिए कि लें	आप (स) के साथ

كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ

तो वह झुक पड़ें (हमला करें)	और अपने सामान	अपने हथियार (जमा)	से	कहीं तुम ग़ाफ़िल हो	कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ

तुम्हें	हो	अगर	तुम पर	गुनाह	और नहीं	एक बार (यकबारगी)	झुकना	तुम पर

اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ

अपना अस्लिहा	कि उतार रखो	बीमार	या तुम हो	बारिश से	तक्लीफ़

وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ١٠٢

102	ज़िल्लत वाला	अ़ज़ाब	काफ़िरों के लिए	तैयार किया	बेशक अल्लाह	अपना बचाओ	और ले लो

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا

और बैठे	खड़े	तो अल्लाह को याद करो	नमाज़	तुम अदा कर चुको	फिर जब

وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ

बेशक	नमाज़	तो क़ाइम करो	तुम मुत्मइन हो जाओ	फिर जब	अपनी करवटें	और पर

الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ١٠٣

103	मुक़र्ररा औक़ात में	फ़र्ज़	मोमिनीन	पर	है	नमाज़

وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ

तो बेशक उन्हें	तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है	अगर	क़ौम (कुफ़्फ़ार)	पीछा करने	में	और हिम्मत न हारो

يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ

वह उम्मीद रखते	जो नहीं	अल्लाह	से	और तुम उम्मीद रखते हो	जैसे तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है	तकलीफ़ पहुँचती है

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ١٠٤ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ ع ١٥ ١٢

ताकि आप फ़ैसला करें	हक़ के साथ (सच्ची)	किताब	आप (स) की तरफ़	हम ने नाज़िल किया	बेशक हम	104	हिक्मत वाला	जानने वाला	और है अल्लाह

بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآىِٕنِيْنَ خَصِيْمًا ۙ ١٠٥

105	झगड़ने वाला (तरफ़दार)	ख़ियानत करने वालों (दग़ाबाज़ों) के लिए	हों	और न	अल्लाह	जो दिखाए आप को	लोग	दरमियान

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ١٠٦ۚ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ

से	और न झगड़ें	106	मेह्रबान	बख़्शने वाला	है	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से बख़्शिश मांगें

الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ

जो हो	दोस्त नहीं रखता	बेशक अल्लाह	अपने तईं	ख़ियानत करते हैं	जो लोग

خَوَّانًا اَثِيْمًا ١٠٧ۙ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ

और नहीं छुपते (शर्माते)	लोग	से	वह छुपते (शर्माते) हैं	107	गुनाहगार	ख़ाइन (दग़ाबाज़)

مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى

पसन्द करता	जो नहीं	जब रातों को मशवरा करते हैं	उन के साथ	हालांकि वह	अल्लाह से

مِنَ الْقَوْلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ١٠٨ هٰٓاَنْتُمْ

हाँ तुम	108	अहाता किए (घेरे) हुए	वह करते हैं	उसे जो	अल्लाह	और है	बात	से

هٰٓؤُلَاۗءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۣ فَمَنْ يُّجَادِلُ

झगड़ेगा	सो - कौन	दुनियवी ज़िन्दगी	में	उन (की तरफ़) से	तुम ने झगड़ा किया	वह

اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ١٠٩

109	वकील	उन पर (उन का)	होगा	कौन?	या	रोज़े क़ियामत	उन (की तरफ़) से	अल्लाह

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْۗءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ

वह पाएगा	फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे	अपनी जान	या ज़ुल्म करे	बुरा काम	काम करे	और जो

اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ١١٠ وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ

वह कमाता है	तो फ़क़त	गुनाह	कमाए	और जो	110	मेह्रबान	बख़्शने वाला	अल्लाह

عَلٰي نَفْسِهٖ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ١١١ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْۗئَةً

ख़ता	कमाए	और जो	111	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	अपनी जान पर

ع ١٦ ٨ ١٣ اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْۗـــًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ١١٢ۧ

112	सरीह (खुला)	और गुनाह	भारी बुहतान	तो उस ने लादा	किसी बेगुनाह	उस की तुहमत लगा दे	फिर	या गुनाह

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ

उन में से	एक जमाअ़त	तो क़स्द किया ही था	और उस की रहमत	आप पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न

اَنْ يُّضِلُّوْكَ ۭ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَھُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ

और नहीं बिगाड़ सकते आप (स) का	अपने आप	मगर	बहका रहे हैं	और नहीं	कि आप को बहका दें

مِنْ شَيْءٍ ۭ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ

और आप को सिखाया	और हिक्मत	किताब	आप (स) पर	और अल्लाह ने नाज़िल की	कुछ भी

الثلثة مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۭ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ١١٣

113	बड़ा	आप (स) पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और है	तुम जानते	जो नहीं थे

और अल्लाह से बख़्शिश मांगें, बेशक अल्लाह है बख़्शने वाला मेह्रबान। **(106)**

आप उन लोगों की तरफ़ से न झगड़ें जो अपने तईं ख़ियानत करते हैं, बेशक अल्लाह उसे दोस्त नहीं रखता जो ख़ाइन (दग़ाबाज़) गुनाहगार हो। **(107)**

वह लोगों से छुपते (शर्माते) हैं और अल्लाह से नहीं छुपते (शर्माते) हालांकि वह उन के साथ है जब कि वह रातों को मशवरा करते हैं जो बात (अल्लाह को) पसन्द नहीं, और जो वह करते हैं अल्लाह उसे अहाता किए (घेरे हुए) है। **(108)**

हाँ (सुनो) तुम वह लोग हो तुम ने उन (की तरफ़) से दुनियवी ज़िन्दगी में झगड़ा किया, सो कौन अल्लाह से झगड़ेगा रोज़े क़ियामत उन की तरफ़ से, या कौन उन का वकील होगा? **(109)**

और जो कोई करे बुरा काम या अपनी जान पर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला मेह्रबान पाएगा। **(110)**

और जो कोई गुनाह कमाए तो वह फ़क़त अपनी जान पर (अपने हक़ में) कमाता है। और अल्लाह है जानने वाला, हिक्मत वाला। **(111)**

और जो कोई ख़ता या गुनाह कमाए, फिर उस की तुहमत लगा दे किसी बेगुनाह पर तो उस ने भारी बुहतान और सरीह (खुला) गुनाह लादा। **(112)**

और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत आप (स) पर न होती तो उन की एक जमाअ़त ने क़स्द कर ही लिया था कि आप को बहका दें, और वह नहीं बहका रहे हैं मगर अपने आप को, और आप (स) का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, और अल्लाह ने आप (स) पर नाज़िल की किताब और हिक्मत, और आप (स) को सिखाया जो आप (स) न जानते थे, और है आप (स) पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल। **(113)**

उन के अक्सर मशवरों (सरगोशियों) में कोई भलाई नहीं मगर यह कि जो हुक्म दे ख़ैरात का या अच्छी बात का या लोगों के दरमियान इस्लाह कराने का, और जो यह करे अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, सो अनक़रीब हम उसे बड़ा सवाब देंगे। (114)

और जो कोई उस के बाद रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करे जब कि उस पर हिदायत ज़ाहिर हो चुकी है, और सब मोमिनों के रास्ते के ख़िलाफ़ चले हम उस के हवाले कर देंगे जो उस ने इख़्तियार किया और हम उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे, और यह पलटने की बुरी जगह है। (115)

बेशक अल्लाह उस को नहीं बख़्शता कि उस का शरीक ठहराया जाए और बख़्श देगा उस के सिवा जिस को चाहे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया, सो वह गुमराह हुआ, गुमराही में बहुत दूर निकल गया। (116)

वह उस (अल्लाह) के सिवा नहीं पुकारते (परस्तिश करते) मगर औरतों को, और नहीं पुकारते मगर सरकश शैतान को, (117)

अल्लाह ने उस पर लानत की। उस (शैतान) ने कहा मैं तेरे बन्दों से अपना हिस्सा ज़रूर लूंगा मुक़र्ररा। (118)

और मैं उन्हें ज़रूर बहकाऊँगा, और ज़रूर उम्मीदें दिलाऊँगा, और उन्हें ज़रूर सिखाऊँगा तो वह ज़रूर चीरेंगे (बुतों की ख़ातिर) जानवरों के कान, और मैं उन्हें सिखाऊंगा तो वह अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें बदलेंगे, और जो बनाए अल्लाह के सिवा शैतान को दोस्त तो वह सरीह नुक़सान में पड़ गया। (119)

वह उन को वादे करता है और उम्मीदें दिलाता है और शैतान उन्हें वादे नहीं करता मगर सिर्फ़ फ़रेब (निरा धोका) (120)

यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है और वह उस से भागने की जगह न पाएंगे। (121)

لَا خَيْرَ فِىْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ

या	ख़ैरात का	हुक्म दे	मगर	उन की सरगोशियों	से	अक्सर	में	नहीं कोई भलाई

مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ۭ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

यह	करे	और जो	लोगों के दरमियान	या इस्लाह कराना	अच्छी बात का

ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ١١٤ وَمَنْ

और जो	114	बड़ा	सवाब	हम उसे देंगे	सो अनक़रीब	अल्लाह की रज़ा	हासिल करना

يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى

हिदायत	उस के लिए	ज़ाहिर हो चुकी	जब	उस के बाद	रसूल	मुख़ालिफ़त करे

وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ

और हम उसे दाख़िल करेंगे	जो उस ने इख़्तियार किया	हम हवाले कर देंगे	मोमिनों का रास्ता	ख़िलाफ़	और चले

جَهَنَّمَ ۭ وَسَاۗءَتْ مَصِيْرًا ١١٥ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ ع ١٧ ١٤

कि शरीक ठहराया जाए	नहीं बख़्शता	बेशक अल्लाह	115	पहुँचने (पलटने) की जगह	और बुरी जगह	जहन्नम

بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ

अल्लाह का	शरीक ठहराया	और जिस	वह चाहे	जिस को	उस	सिवा	जो	और बख़्शेगा	उस का

فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ١١٦ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ

उस के सिवा	वह नहीं पुकारते	116	दूर	गुमराही	सो गुमराह हुआ

اِلَّآ اِنٰثًا ۚ وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ١١٧ۙ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وقف لازم

अल्लाह ने उस पर लानत की	117	सरकश	शैतान	मगर	पुकारते हैं	और नहीं	मगर औरतें

وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ١١٨ۙ

118	मुक़र्ररा	हिस्सा	तेरे बन्दे	से	मैं ज़रूर लूँगा	और उस ने कहा

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ

कान	तो वह ज़रूर चीरेंगे	और उन्हें हुक्म दुँगा	और उन्हें ज़रूर उम्मीदें दिलाऊंगा	और उन्हें ज़रूर बहकाऊंगा

الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّتَّخِذِ

पकड़े (बनाए)	और जो	अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें	तो वह ज़रूर बदलेंगे	और उन्हें हुक्म दुँगा	जानवर (जमा)

الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ١١٩ۭ

119	सरीह	नुक़सान	तो वह पड़ा नुक़सान में	अल्लाह के सिवा	दोस्त	शैतान

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ۭ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ١٢٠

120	सिर्फ़ फ़रेब	मगर	शैतान	और उन्हें वादे नहीं देता	और उन्हें उम्मीद दिलाता है	वह उन को वादा देता है

اُولٰۗىِٕكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۡ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ١٢١

121	भागने की जगह	उस से	और वह न पाएंगे	जहन्नम	जिन का ठिकाना	यही लोग

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ

बाग़ात	हम अ़नक़रीब उन्हें दाख़िल करेंगे	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	और जो लोग

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ

अल्लाह का वादा	हमेशा हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	से	बहती हैं

حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿۱۲۲﴾ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ

तुम्हारी आर्ज़ूओं पर	न	122	बात में	अल्लाह	से	सच्चा	और कौन	सच्चा

وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ

उस की सज़ा पाएगा	बुराई	जो करेगा	अहले किताब	आर्ज़ूएं	और न

وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۳﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ

करेगा	और जो	123	और न मददगार	कोई दोस्त	अल्लाह के सिवा	अपने लिए	और न पाएगा

مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ

तो ऐसे लोग	मोमिन	बशर्त यह कि वह	या औ़रत	मर्द	से	अच्छे काम	से

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۴﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ

ज़ियादा बेहतर	और कौन	124	तिल बराबर	उन पर ज़ुल्म होगा	और न	जन्नत	दाख़िल होंगे

دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ

दीन	और उस ने पैरवी की	नेकोकार	और वह	अल्लाह के लिए	अपना मुँह	झुका दिया	से- जिस	दीन

اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿۱۲۵﴾ وَلِلّٰهِ مَا

और अल्लाह के लिए जो	125	दोस्त	इब्राहीम (अ)	और अल्लाह ने बनाया	एक का हो कर रहने वाला	इब्राहीम (अ)

ع ١٨ ١١ ١٥ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿۱۲۶﴾ ع

126	अहाता किए हुए	चीज़	हर	और है अल्लाह	ज़मीन	में	और जो	आस्मानों में

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا

और जो	उन के बारे में	तुम्हें हुक्म देता है	अल्लाह	आप कहदें	औ़रतों के बारे में	और वह आप से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं

يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ

वह जिन्हें	औ़रतें	यतीम	(बारे) में	किताब (कुरआन) में	तुम्हें	सुनाया जाता है

لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ

उन को निकाह में ले लो	कि	और नहीं चाहते हो	उन के लिए	जो लिखा गया (मुक़र्रर)	तुम उन्हें नहीं देते

وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى

यतीमों के बारे में	क़ाइम रहो	और यह कि	बच्चे	से (बारे में)	और बेबस

بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿۱۲۷﴾

127	उस को जानने वाला	है	तो बेशक अल्लाह	कोई भलाई	और जो तुम करोगे	इन्साफ़ पर

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए हम अ़नक़रीब उन्हें बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और कौन है अल्लाह से ज़ियादा सच्चा बात में? **(122)**

(अ़ज़ाब ओ सवाब) न तुम्हारी आर्ज़ूओं पर है और न अहले किताब की आर्ज़ूओं पर, जो कोई बुराई करेगा उस की सज़ा पाएगा और अपने लिए नहीं पाएगा अल्लाह के सिवा कोई दोस्त और न मददगार। **(123)**

और जो अच्छे काम करेगा, मर्द हो या औ़रत, बशर्त यह कि वह मोमिन हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उन पर तिल बराबर ज़ुल्म न होगा। **(124)**

और किस का दीन उस से बेहतर? जिस ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकोकार भी है, और उस ने एक के हो रहने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की पैरवी की, और अल्लाह ने इब्राहीम (अ) को दोस्त बनाया। **(125)**

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को अहाता किए हुए है। **(126)**

आप (स) से औ़रतों के बारे में हुक्म दर्याफ़्त करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उन के बारे में हुक्म (इजाज़त) देता है, और जो तुम्हें कुरआन मजीद में सुनाया जाता है यतीम औ़रतों के बारे में, जिन्हें तुम नहीं देते उन का मुक़र्रर किया हुआ (मेहर) और नहीं चाहते कि उन को निकाह में ले लो, और बेबस बच्चों के बारे में, और यह कि तुम यतीमों के बारे में इन्साफ़ पर क़ाइम रहो, और तुम जो भलाई करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। **(127)**

और अगर कोई औ़रत डरे (अन्देशा करे) अपने ख़ावन्द (की तरफ़) से ज़ियादती या बेरग़बती तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि वह सुलह कर लें आपस में, और सुलह बेहतर है, और तबीअ़तों में बुख़्ल हाज़िर किया गया है (मौजूद होता ही है), और अगर तुम नेकी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो तो बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (128)

और हरगिज़ न कर सकोगे अगरचे तुम बोहतेरा चाहो कि औ़रतों के दरमियान बराबरी रखो, पस न झुक पड़ो बिलकुल (एक ही तरफ़) कि एक को (आध में) लटकती हुई डाल रखो, और अगर तुम इस्लाह करते रहो और परहेज़गारी करो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेह्रबान है। (129)

और अगर दोनों (मियां बीवी) जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को बेनियाज़ कर देगा अपनी कशाइश से, और अल्लाह कशाइश वाला हिक्मत वाला है। (130)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और हम ने ताकीद कर दी है उन लोगों को जिन्हें किताब दी गई तुम से पहले और तुम्हें (भी) कि अल्लाह से डरते रहो, और अगर तुम कुफ़्र करोगे तो बेशक अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह बेनियाज़ है, सब ख़ूबियों वाला। (131)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और काफ़ी है अल्लाह कारसाज़। (132)

अगर (अल्लाह) चाहे कि तुम्हें ले जाए (फ़ना कर दे) ऐ लोगो! और दूसरों को ले आए (ला बसाए), और अल्लाह उस पर क़ादिर है। (133)

जो कोई दुनिया का सवाब चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया और आख़िरत का सवाब है, और अल्लाह सुनने वाला, और देखने वाला है। (134)

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا

बे रग़बती	या	ज़ियादती	अपने ख़ावन्द से	डरे	कोई औ़रत	और अगर

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۭ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۭ

बेहतर	और सुलह	सुलह	आपस में	कि वह सुलह कर लें	उन दोनों पर	तो नहीं गुनाह

وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ۭ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गारी करो	तुम नेकी करो	और अगर	बुख़्ल	तबीअ़तें	और हाज़िर किया गया (मौजूद है)

كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ١٢٨ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا

बराबरी रखो	कि	कर सकोगे	और हरगिज़ न	128	बाख़बर	जो तुम करते हो	है

بَيْنَ النِّسَاۗءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا

कि एक को डाल रखो	बिलकुल झुक जाना	पस न झुक पड़ो	बोहतेरा चाहो	अगरचे	औ़रतों के दरमियान

كَالْمُعَلَّقَةِ ۭ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا

बख़्शने वाला	है	तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गारी करो	इस्लाह करते रहो	और अगर	जैसे लटकती हुई

رَّحِيْمًا ١٢٩ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ۭ وَكَانَ

और है	अपनी कशाइश से	से	हर एक को	अल्लाह बेनियाज़ कर देगा	दोनों जुदा हो जाएं	और अगर	129	मेहरबान

اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ١٣٠ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ

ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में	और अल्लाह के लिए जो	130	हिक्मत वाला	कशाइश वाला	अल्लाह

وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ

और तुम्हें	तुम से पहले	से	जिन्हें किताब दी गई	वह लोग	और हम ने ताकीद कर दी है

اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	जो	तो बेशक अल्लाह के लिए	तुम कुफ़्र करोगे	और अगर	कि डरते रहो अल्लाह से

فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ١٣١ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	में	और अल्लाह के लिए जो	131	सब ख़ूबियों वाला	बेनियाज़	अल्लाह	और है	ज़मीन में

وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ١٣٢ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

तुम्हें ले जाए	अगर वह चाहे	132	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी	ज़मीन में	और जो

اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي ذٰلِكَ

उस पर	और है अल्लाह	दूसरों को	और ले आए	ऐ लोगो

قَدِيْرًا ١٣٣ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ

तो अल्लाह के पास	दुनिया का सवाब	चाहता है	जो	133	क़ादिर

ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ١٣٤ ع ١٩ ع ٨ ١٦

134	देखने वाला	सुनने वाला	और है अल्लाह	और आख़िरत	दुनिया	सवाब

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ

गवाही देने वाले अल्लाह के लिए	इन्साफ़ पर	क़ाइम रहने वाले	हो जाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا

कोई मालदार	अगर (चाहे) हो	और क़राबतदार	माँ बाप	या	खुद तुम्हारे ऊपर (ख़िलाफ़)	अगरचे

اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۣ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ

की इन्साफ़ करो	ख़्वाहिश	पैरवी करो	सो-न	उन का	ख़ैर ख़्वाह	पस अल्लाह	या मोहताज

وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ١٣٥

135	बाख़बर	तुम करते हो	जो	है	तो बेशक अल्लाह	या पहलूतही करोगे	और अगर तुम ज़बान दबाओगे

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ

जो उस ने नाज़िल की	और किताब	और उस का रसूल	अल्लाह पर	ईमान लाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ

عَلٰي رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ

अल्लाह का	इन्कार करे	और जो	इस से क़ब्ल	जो उस ने नाज़िल की	और किताब	अपने रसूल पर

وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا

गुमराही	तो वह भटक गया	और रोज़े आख़िरत	और उस के रसूलों	और उस की किताबों	और उस के फ़रिश्तों

بَعِيْدًا ١٣٦ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ

फिर	फिर काफ़िर हुए	ईमान लाए	फिर	फिर काफ़िर हुए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	136	दूर

ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ١٣٧ ۭ

137	राह	और न दिखाएगा	उन्हें	कि बख़्शदे	अल्लाह	नहीं है	बढ़ते रहे कुफ़्र में

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمَا ١٣٨ ۙ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ

पकड़ते हैं (बनाते हैं)	जो लोग	138	दर्दनाक अज़ाब	उन के लिए	कि	मुनाफ़िक़ (जमा)	ख़ुशख़बरी दें

الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ

उन के पास	क्या ढूंडते हैं?	मोमिनीन	सिवाए (छोड़ कर)	दोस्त	काफ़िर (जमा)

الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ١٣٩ ۭ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ

किताब में	तुम पर	उतार चुका	और तहक़ीक़	139	सारी	अल्लाह के लिए	इज़्ज़त	बेशक	इज़्ज़त

اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا

तो न बैठो	उस का	मज़ाक़ उड़ाया जाता है	उस का	इन्कार किया जाता है	अल्लाह की आयतें	जब तुम सुनो	यह कि

مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ڮ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ۭ

उन जैसे	उस सूरत में	यक़ीनन तुम	उस के सिवा	बात	में	वह मशग़ूल हों	यहां तक कि	उन के साथ

اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعَۨا ١٤٠ ۙ

140	तमाम	जहन्नम में	और काफ़िर (जमा)	मुनाफ़िक़ (जमा)	जमा करने वाला	बेशक अल्लाह

ऐ ईमान वालो! हो जाओ इन्साफ़ पर क़ाइम रहने वाले अल्लाह के लिए गवाही देने वाले अगरचे खुद तुम्हारे ख़िलाफ़ या माँ बाप और क़राबतदारों (के ख़िलाफ़) हो, चाहे कोई मालदार हो या मोहताज (बहर हाल) अल्लाह उन का (सब से बढ़ कर) ख़ैर ख़्वाह है, सो तुम ख़्वाहिश (नफ़्स) की पैरवी न करो इन्साफ़ करने में, और अगर तुम (गवाही में) ज़बान दबाओगे या पहलूतही करोगे तो बेशक अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (135)

ऐ ईमान वालो! तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर और उस किताब पर जो उस ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल की (क़ुरआन) और उन किताबों पर जो उस से क़ब्ल नाज़िल कीं, और जो इन्कार करे अल्लाह का, और उस के फ़रिश्तों, उस की किताबों, उस के रसूलों और रोज़े आख़िरत का तो भटक गया दूर की गुमराही में। (136)

बेशक जो लोग ईमान लाए, फिर काफ़िर हुए, फिर ईमान लाए, फिर काफ़िर हुए, फिर कुफ़्र में बढ़ते रहे, अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा और न उन्हें (सीधी) राह दिखाएगा। (137)

मुनाफ़िक़ों को ख़ुशख़बरी दें कि उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (138)

जो लोग मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वह उन के पास इज़्ज़त ढूंडते हैं? बेशक सारी इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है। (139)

और तहक़ीक़ (अल्लाह) किताब (क़ुरआन) में तुम पर (यह हुक्म) उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार किया जाता है और उन का मज़ाक़ उड़ाया जाता है तो उन के साथ न बैठो यहां तक कि वह मशग़ूल हों उस के सिवा (किसी और) बात में, यक़ीनन उस सूरत में तुम उन जैसे होगे, बेशक अल्लाह जमा करने वाला है तमाम मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को जहन्नम में (एक जगह)। (140)

जो लोग तकते (इन्तिज़ार करते) रहते हैं तुम्हारा, फिर अगर तुम को अल्लाह की तरफ़ से फ़तह हो तो कहते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों के लिए हिस्सा हो (फ़तह हो) तो कहते हैं क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं आए थे? और हम ने तुम्हें बचाया था मुसलमानों से। सो अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा, और हरगिज़ न देगा अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानो पर राह (ग़लबा)। (141)

बेशक मुनाफ़िक़ धोका देते हैं अल्लाह को, और वह उन को धोके (का जवाब) देगा, और जब नमाज़ को खड़े हों तो सुस्ती से खड़े हों, वह दिखाते हैं लोगों को और अल्लाह को याद नहीं करते मगर बहुत कम। (142)

उस के दरमियान अधर में लटके हुए हैं न इन की तरफ़ न उन की तरफ़, और जिस को अल्लाह गुमराह करे तू हरगिज़ उस के लिए न पाएगा कोई राह। (143)

ऐ ईमान वालो! काफ़िरों को दोस्त न बानओ मुसलमानों को छोड़ कर, क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने ऊपर अल्लाह का सरीह इल्ज़ाम लो? (144)

बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से निचले दरजे में होंगे, और तू हरगिज़ उन का कोई मददगार न पाएगा। (145)

मगर जिन लोगों ने तौबा की और (अपनी) इस्लाह कर ली और मज़बूती से अल्लाह (की रस्सी) को पकड़ लिया और अपना दीन अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लिया तो ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे, और अल्लाह जल्द मोमिनों को बड़ा सवाब देगा। (146)

अगर तुम शुक्र करोगे और ईमान लाओगे तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा? और अल्लाह क़द्रदान, ख़ूब जानने वाला है। (147)

الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا

कहते हैं	अल्लाह (की तरफ़) से	फ़तह	तुम को	फिर अगर हो	तुम्हें	तकते रहते हैं	जो लोग

اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا

कहते हैं	हिस्सा	काफ़िरों के लिए	हो	और अगर	तुम्हारे साथ	क्या हम न थे?

اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ

तुम्हारे दरमियान	फ़ैसला करेगा	सो अल्लाह	मोमिनीन	से	और हम ने मना किया था (बचाया था) तुम्हें	तुम पर	क्या हम ग़ालिब नहीं आए थे

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤١﴾ ع ٢٠ ١٧

141	राह	मोमिनों पर	काफ़िरों को	अल्लाह	और हरगिज़ न देगा	क़ियामत के दिन

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا

खड़े हों	और जब	उन्हें धोका देगा	और वह	धोका देते हैं अल्लाह को	बेशक मुनाफ़िक़

اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَاۗءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ

याद करते	और नहीं	लोग	वह दिखाते हैं	खड़े हों सुस्ती से	नमाज़	तरफ़ (को)

اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٤٢﴾ۙ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۤۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ وَلَآ

और न	इन की तरफ़	न	उस	दरमियान	अधर में लटके हुए	142	मगर बहुत कम	अल्लाह

اِلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾ يٰٓاَيُّهَا

ऐ	143	कोई राह	उस के लिए	तू हरगिज़ न पाएगा	गुमराह करे अल्लाह	और जो-जिस	उन की तरफ़

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ

सिवाए	दोस्त	काफ़िर (जमा)	न पकड़ो (न बनाओ)	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)

الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٤﴾

144	सरीह	इल्ज़ाम	तुम पर (अपने ऊपर)	अल्लाह का	कि तुम करो (लो)	क्या तुम चाहते हो	मोमिनीन

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ

और हरगिज़ न पाएगा	दोज़ख़	से	सब से नीचे का दरजा	में	मुनाफ़िक़ (जमा)	बेशक

لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿١٤٥﴾ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ

अल्लाह को	और मज़बूती से पकड़ा	और इस्लाह की	जिन्हों ने तौबा की	मगर	145	कोई मददगार	उन के लिए

وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ وَسَوْفَ

और जल्द	मोमिनों के साथ	तो ऐसे लोग	अल्लाह के लिए	अपना दीन	और ख़ालिस कर लिया

يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ

तुम्हारे अज़ाब से	अल्लाह	क्या करेगा	146	बड़ा सवाब	मोमिन (जमा)	देगा अल्लाह

اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٧﴾

147	ख़ूब जानने वाला	क़द्रदान	अल्लाह	और है	और ईमान लाओगे	अगर तुम शुक्र करोगे